बी॰ए॰ भाग-3
हिन्दी - प्रतिष्ठा
पेपर - 7
'आधुनिक भारतीय आर्यभाषा'

रमेश कुमार यादव
हिन्दी विभाग
डी॰ के॰ कालेज
डुमरांव

आधुनिक भारतीय आर्यभाषा 1000 ई॰ से वर्तमान समय तक-

आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओं का विकास अपभ्रंश अथवा तृतीय प्राकृत से हुआ है। जैसा ऊपर कहा गया है, नागर, ब्राचड़ और उपनागर - इन तीन अपभ्रंशों से सभी आधुनिक आर्यभाषाओं का विकास नहीं दिखाया जा सकता। अतः प्राकृतों के आधार पर ही अपभ्रंशों की कल्पना की गयी है, अर्थात् जहाँ जो प्राकृत बोली जाती थी, वहाँ उसी के अपभ्रंश रूप का विकास हुआ।

आ॰ भा॰ आ॰ भा॰ की सामान्य विशेषताएँ-

(1) आधुनिक आर्यभाषाएँ लगभग पूर्णतः अयोगात्मक हो गयी हैं।

(2) ध्वनियों में अनेक परिवर्तन हो गये हैं, फिर भी लिपि में परम्परा का पालन किया जा रहा है। उदाहरणार्थ, ष का शुद्ध उच्चारण नहीं होता, किन्तु लिखने में प्रयोग होता है। ष का उच्चारण या तो ख जैसा होता है या स जैसा। अर्द्धमागधी से विकसित भाषाओं के क्षेत्र में ष और स में कोई भेद नहीं किया जाता है। ऋ और रि में उच्चारण की दृष्टि से कोई भेद नहीं है। महाराष्ट्र और उड़ीसा में ऋ का उच्चारण रु हो जाता है। ज्ञ का उच्चारण ग्यँ, ज्यँ और ध्यँ होता है। सामान्य

उच्चारण य्यें है, पर आर्यसमाज के अनुयायी ज्यें कहते हैं और महाराष्ट्र में यँ कहा जाता है। क्ष का उच्चारण छ्छ किया जाता है। ङ और ण का दूसरे वर्गों से संयोग होने पर उच्चारण नहीं होता; जैसे दण्ड या चञ्चल का उच्चारण दंड या चंचल होता है, जो अनुस्वार से भिन्न नहीं है। क ख ग ज फ़ अनेक विदेशी ध्वनियाँ भी स्वीकृत हो गयी हैं, किन्तु इनका प्रयोग इने-गिने शिक्षित लोगों द्वारा ही होता है।

(3) स्वर के बदले बल का प्राधान्य है, किन्तु वाक्य में स्वर का प्रयोग भी पाया जाता है।

(4) अपभ्रंश के शब्द-रूपों की अपेक्षा आ. भा. आर्यभाषा के शब्द-रूप और भी कम हैं। केवल दो शब्द-रूप पाये जाते हैं। विकृत और अविकृत। विभक्ति-सूचक तत्वों का अस्तित्व स्वतन्त्र हो गया है।

(5) केवल मराठी और गुजराती में तीन लिंग हैं, अन्यथा शेष भाषाओं में दो ही हैं। वचनों की संख्या सर्वत्र दो ही है।

(6) आधुनिक भारतीय आर्यभाषा की एक महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि अंग्रेजी, अरबी और फ़ारसी के बहुत सारे शब्द भारतीय भाषाओं में प्रविष्ट हो गये हैं।

अपभ्रंश से आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओं का विकास निम्नलिखित रुप में हुआ है—

अपभ्रंश — आधुनिक भाषाएँ

शौरसेनी - पश्चिमी हिन्दी (ब्रजभाषा, खड़ी-बोली, बाँगरु, कन्नौजी, बुन्देली)
राजस्थानी (मेवाती, मारवाड़ी, मालवी, जयपुरी, गुजराती)

अर्द्धमागधी - पूर्वी हिन्दी (अवधी, बघेली, छत्तीसगढ़ी)

मागधी - भोजपुरी, मैथिली, मगही, बंगला, असमी, उड़िया।

खस - पहाड़ी (शौरसेनी से प्रभावित)

ब्राचड़ - पंजाबी (शौरसेनी से प्रभावित) सिन्धी।

महाराष्ट्री - मराठी।

ग्रियर्सन ने भोजपुरी, मैथिली और मगही को एक साथ रखकर बिहारी नाम दिया था, किन्तु यह नाम वैज्ञानिक नहीं है, कारण कि जिस प्रकार बंगला एक भाषा है, उसी प्रकार बिहारी कोई एक भाषा नहीं है। बिहारी की तीनों भाषाओं में पर्याप्त अन्तर है। दूसरी बात यह है कि भौगोलिक दृष्टि से भी बिहारी नाम बहुत संगत नहीं है, क्योंकि भोजपुरी का विस्तार बिहार से अधिक उत्तरप्रदेश में पड़ता है। (बनारस, मिर्जापुर, जौनपुर, गाज़ीपुर, बलिया आदि)

रमेश कुमार यादव
असिस्टेंट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग, डी.के.कॉलेज डु